रंतिदेव

दया के लिए प्रसिद्ध राजा है रंतिदेव। उनके दरबार में अतिथियों के लिए खाने पकाने करीब बीस हज़ार नौकर नियुक्त थे।वे दिन-रात अतिथियों का स्वागत - सत्कार करने जागरुक रहे।उन्होंने अपनी सारी कमाई ब्राह्मणों को दान में दे दी। वेदाध्ययन करके रंतिदेव ने दुश्मनों को धर्म से परास्त किया । दान-कर्म के लिए मारी गई मावेशियों के चमड़े से बहे खून ने एक नदी का रूप लिया ,उस नदी का नाम है - चर्मण्यवती नदी।दिन- भर भूखा-प्यासा रहने के बावजूद एक बार रंतिदेव ने अपने महल में अतिथि बनकर आए वसिष्ठमुनि को अपना खाना दे दिया।